RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

12th HISTORY

ARJUN BATCH

ईंटें, मनके तथा अस्थियां

हड़प्पा सभ्यता

अध्याय-1 | भाग-5



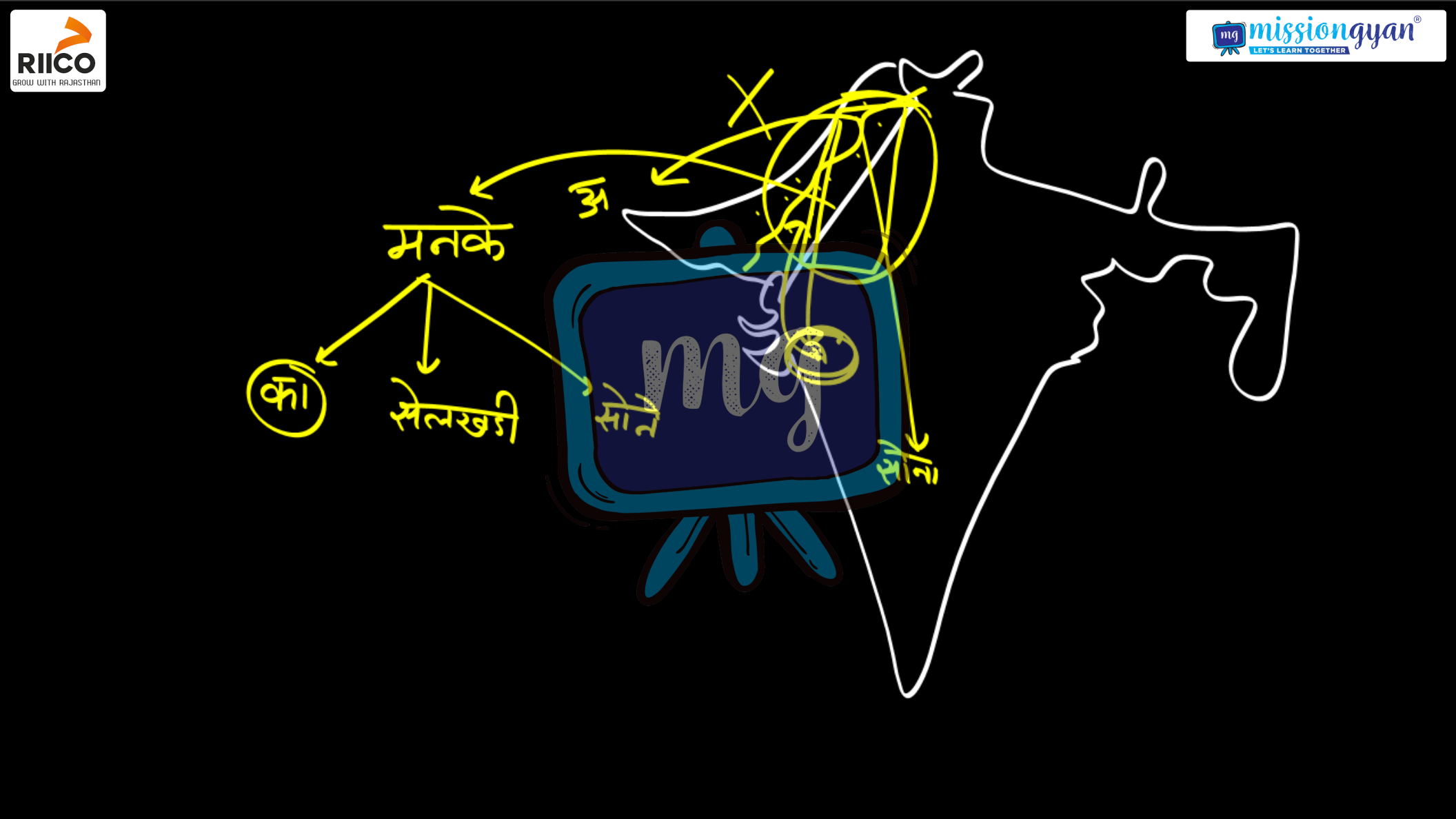
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

मनके → चान्दडूदडो (कारखाना)

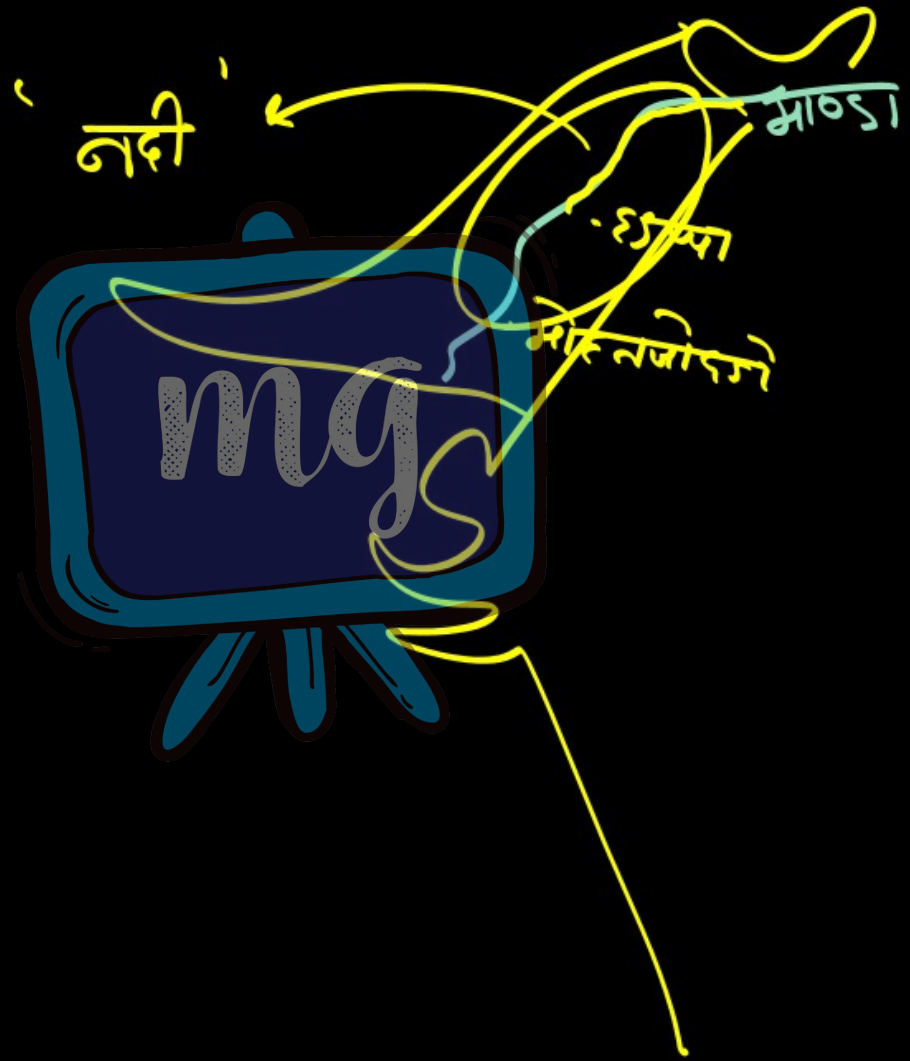


- कूड़ा
- ओजार
- कच्चामाल
- अपूर्ण वस्तु


X
अ
मनके
को
सेलखड़ी
सोने
खो
ना

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

माल प्राप्त करने संबंधी नीतियाँ (तरीके)

- शिल्प उत्पादन के लिए स्थानीय मिट्टी के अलावा पत्थर, लकड़ी और धातु बाहर से मंगाए जाते थे।

(i) बैलगाड़ियों के मिट्टी के प्रतिरूप मिले हैं, जो स्थल मार्ग के लिए बैलगाड़ी को परिवहन का महत्वपूर्ण साधन दर्शाते हैं।

(ii) सिंधु तथा इसकी उपनदियों के किनारे पर रहने वाले लोग नदी मार्गों का प्रयोग करते होंगे।




RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER
का
कास्य
खेतड़ी
सोना
mg

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उपमहाद्वीप तथा उसके आगे से आने वाला माल

- शिल्प उत्पादन हेतु माल प्राप्त करने के लिए हड़प्पावासी कई तरीके अपनाते थे।

1. नागेश्वर एवं बालाकोट जहां शंख उपलब्ध थे, बस्तियां स्थापित कर लीं।
2. शोर्तुघई (अफगानिस्तान) कीमती नीले रंग के लाजमर्द मणि के स्त्रोत के निकट था।
3. लोथल

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



(a) कार्निलियन के स्त्रोत (गुजरात में भरुच)

(b) सेलखड़ी के स्त्रोत (दक्षिणी राजस्थान तथा उत्तरी गुजरात)

(c) धातु स्त्रोत (राजस्थान) के निकट था।

4. कच्चा माल प्राप्त करने के लिए राजस्थान में खेतड़ी से (ताँबा) तथा दक्षिण भारत (सोने के लिए) अभियान भेजकर संपर्क स्थापित करते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



खेतड़ी क्षेत्र के साक्ष्यों को पुरातत्वविदों ने गणेश्वर जोधपुरा संस्कृति नाम दिया।

यहां के मृदभांड हड़प्पा से भिन्न थे और तांबे की वस्तुओं के असाधारण भंडार के केंद्र थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. गणेश्वर जोधपुरा संस्कृति कहा स्थित है?

Q. हड़प्पा सभ्यता के लोग कच्चे माल की आपूर्ती कैसे करते थे?

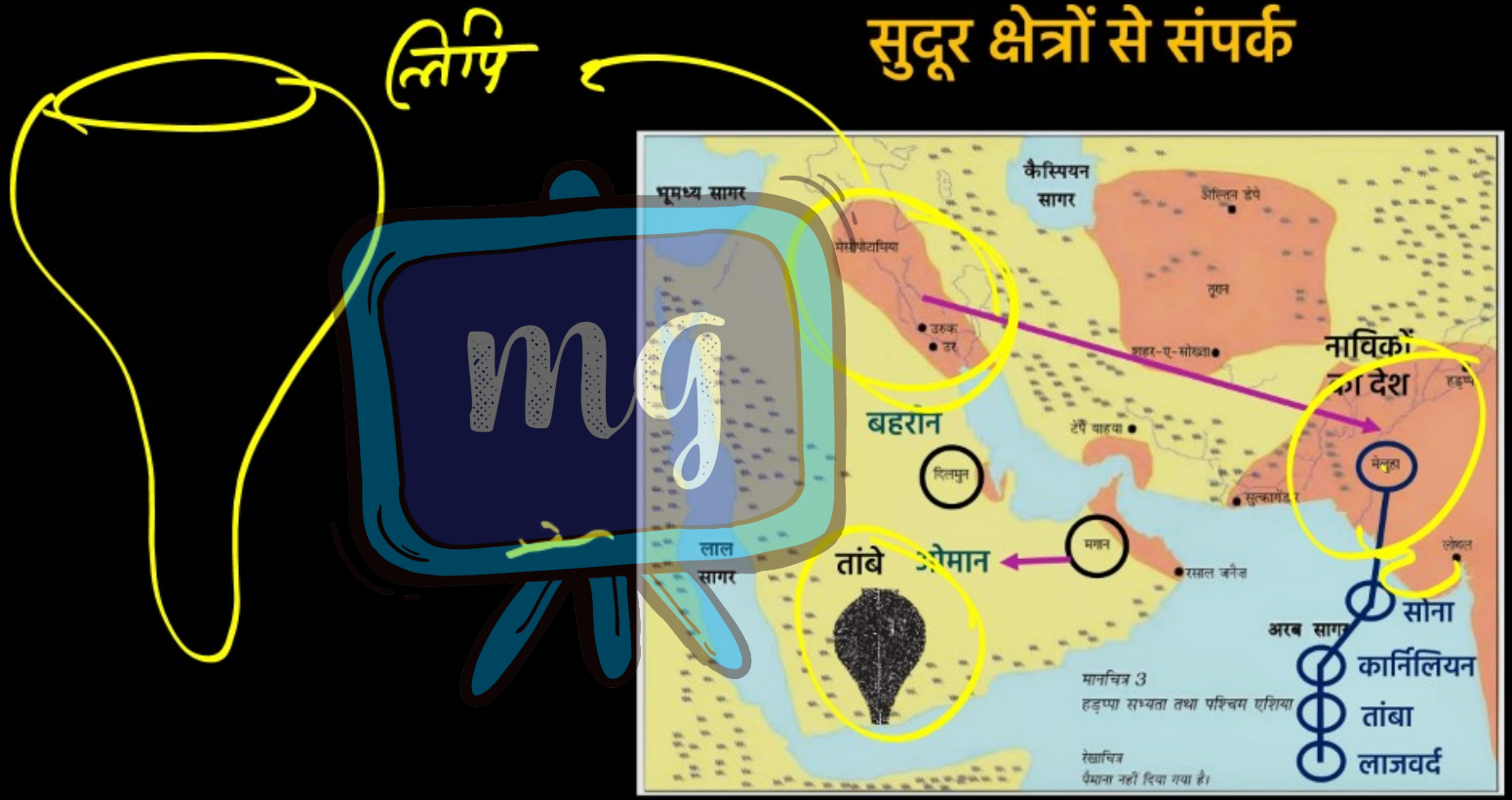
Q. माल आपूर्ती करने के संबंध मे तरीके स्पष्ट करे और स्त्रोत की एक सूची बनाये?



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

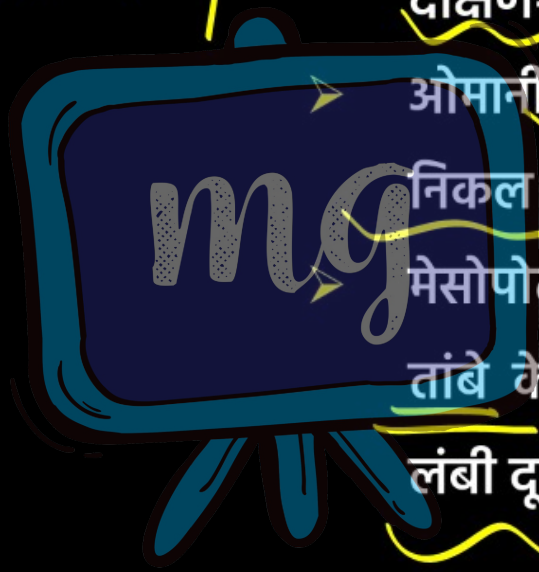
सुदूर क्षेत्रों से संपर्क



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

निकल

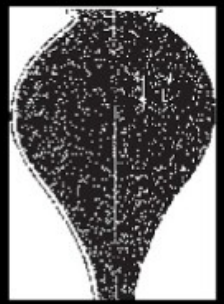


- तांबा संभवतः ओमान, अरब प्रायद्वीप के दक्षिण-पूर्वी छोर से लाया जाता था।
- ओमानी तांबे और हड़प्पाई पुरावस्तुओं में निकल के अंश मिले हैं।
- मेसोपोटामिया के लेखों में मगान (ओमान) से तांबे के आगमन का उल्लेख मिलता है, जो लंबी दूरी के संपर्कों को दर्शाता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- मेसोपोटामिया के लेखों से दिलमुन (बहरीन द्वीप), मगान (ओमान), मेलुहा (हड़प्पाई क्षेत्र) से संपर्कों की जानकारी मिली है तथा इन लेखों में मेलुहा से कार्निलियन, लाजवर्द मणि, ताँबा, सोना तथा विशिष्ट प्रकार की लकड़ी प्राप्त करने के भी उल्लेख हैं।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- एक विशिष्ट हड़प्पाई मर्तबान, जिसके ऊपर काली मिट्टी की परत चढ़ाई जाती थी, ओमानी स्थलों से मिला है।
- काली मिट्टी तरल पदार्थ के रिसाव को रोकती थी।
- संभवतः हड़प्पाई लोग इसमें रखे सामान के बदले ओमानी तांबा लेते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

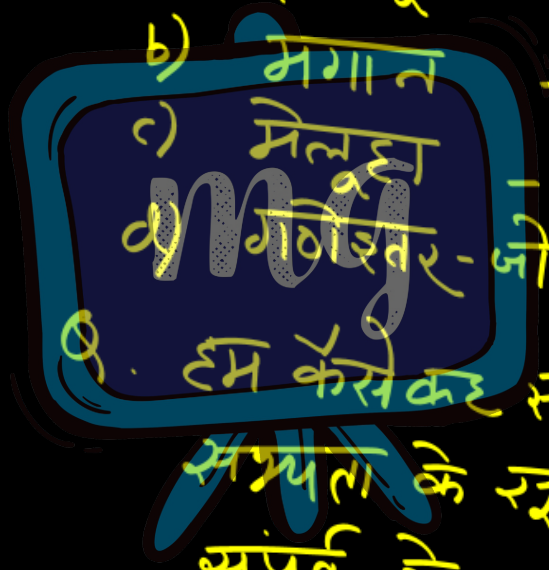
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- मेसोपोटामिया से मेलुहा लोगों का संपर्क सामुद्रिक मार्ग से था, इसलिए वो मेलुहा को नाविकों का देश कहते थे। मोहर पर नाव का चिह्न यही दर्शाता है।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Q. निम्न स्थानो के वर्तमान देशी/प्रकार के आधार पर नाम लिखे

a) दिलमून –

b) मेगान –

c) मेलहा –

d) गोइतर-जोधपुरा –

Q. हम कैसे कह सकते है की हड़प्पा सभ्यता के समकालीन क्षेत्रो से संपर्क थे, उदाहरण सहित बताइये?

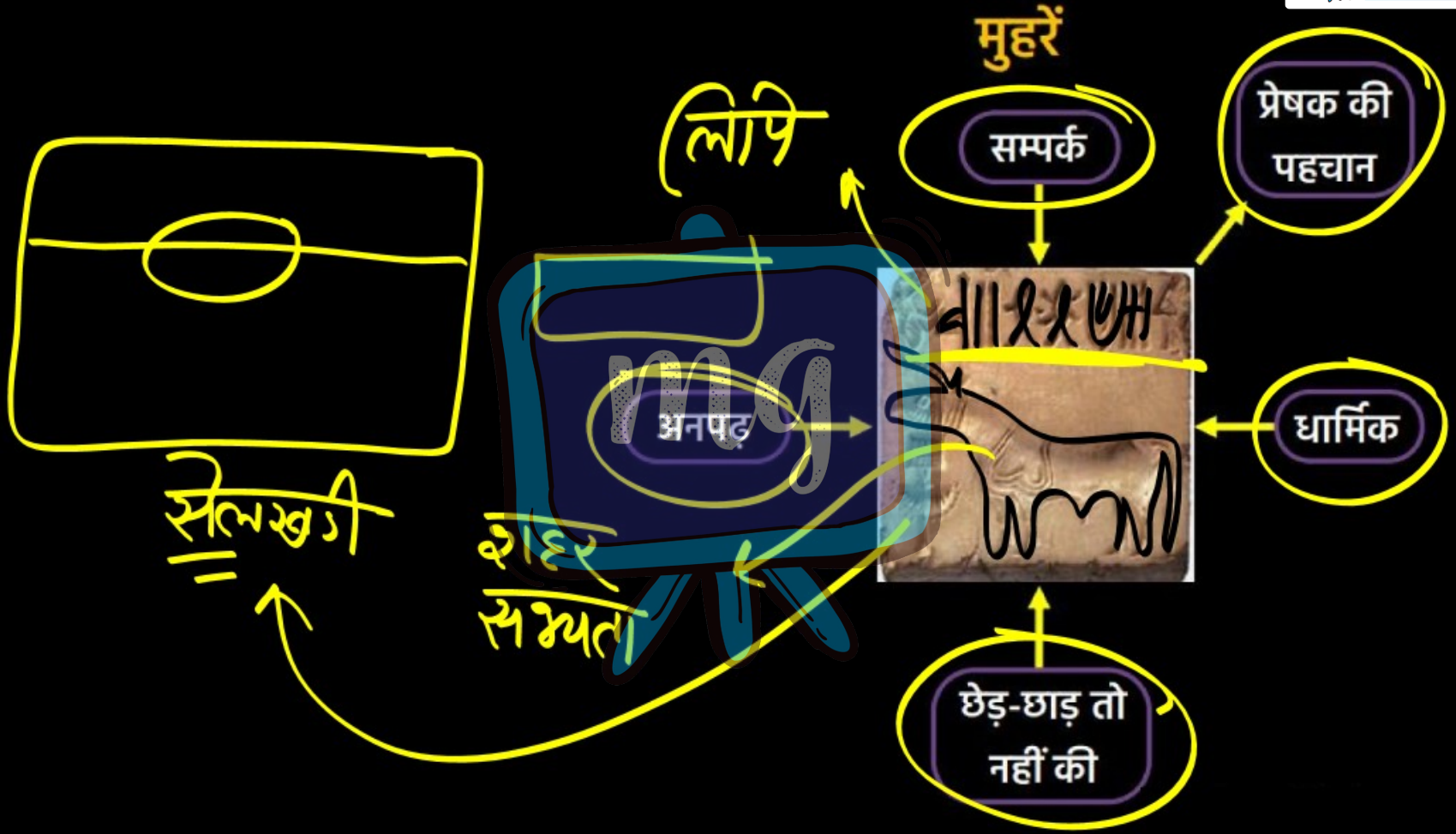

mg

मुहरें

- मुहरों और मुद्रांकनों का प्रयोग लम्बी दूरी के संपर्कों को आसान बनाता था।
- सामान भरे थैले के मुख को रस्सी से बांधकर उसकी गाँठ पर गीली मिट्टी जमा करके मुहरों से दबा कर छाप डाल दी जाती थी।
- गंतव्य स्थान तक छाप वैसी ही अक्षुण्ण रहे तो किसी प्रकार की छेड़-छाड़ नहीं हुई है।
- मुद्रांकन से प्रेषक की पहचान हो जाती थी।

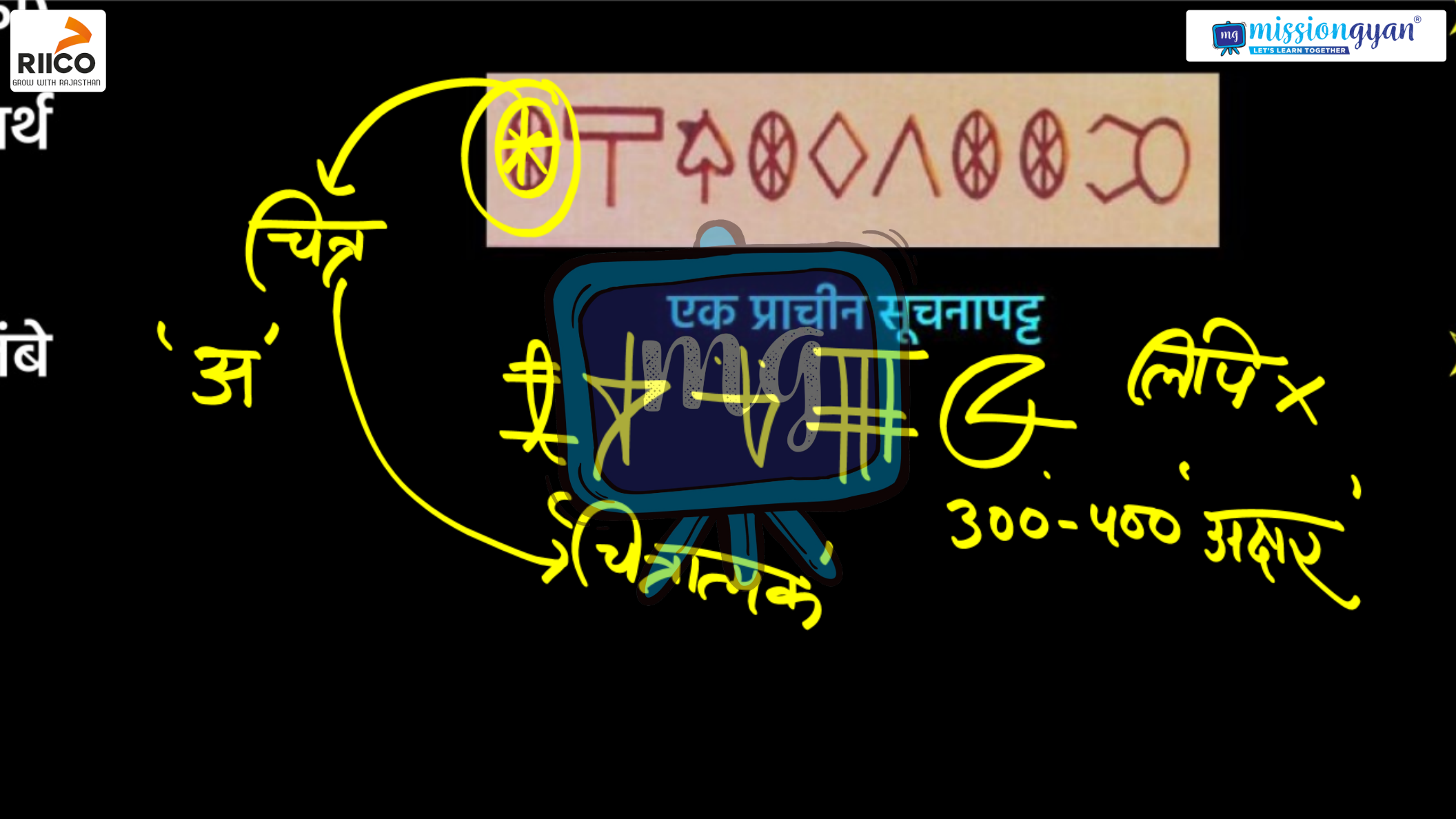
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



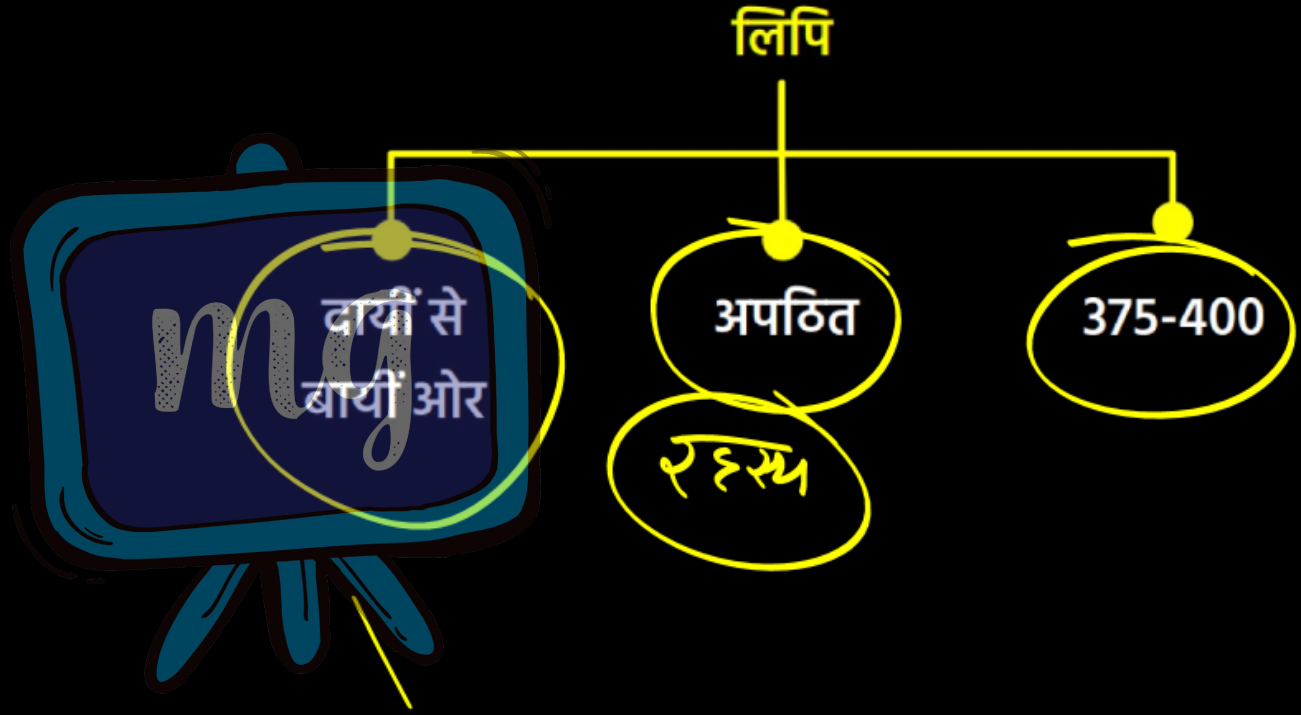
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- यह लिपि अब तक पढ़ी नहीं जा सकी है, लेकिन यह वर्णमालीय नहीं लगती क्योंकि इसमें 375 से 400 चिन्ह हैं।
- वर्णमालीय लिपियों में स्वर और व्यंजन के चिन्ह होते हैं।
- यह लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती होगी, क्योंकि दाईं ओर चौड़ा अंतराल और बाईं ओर संकुचन है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

लिखावटें : मुहरों, औजारों, मर्तबानों, आभूषणों, अस्थि छड़ों और सूचना पट्टे पर मिली हैं, जिससे साक्षरता व्यापक साबित होती है।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

बांट

- विनिमय बांटों की परिशुद्ध प्रणाली से नियंत्रित थे।
- बांट चर्ट नामक पत्थर से बनाये जाते थे।
- घनाकार आकृति के होते थे।
- इन बांटों के निचले मानदंड द्विआधारी (1, 2, 4, 8, 16, 32 ... इत्यादि) थे। जबकि ऊपरी मानदंड दशमलव प्रणाली का अनुसरण करते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- छोटे बांटों का प्रयोग आभूषणों तथा मनकों को तौलने ने में किया जाता होगा।
- धातु से बने तराजू के पलड़े भी मिले हैं।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

प्राचीन सत्ता

हडप्पाई पुरावस्तुओं में एकरुपता

- संरचनाऐं कच्ची ईंटों के चबूतरे पर बनी।
- निचले शहर से अलग करने के लिए दीवार का घेरा।

श्रम संगठित करना

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

प्रासाद तथा शासक

- मोहनजोदड़ो के एक विशाल भवन को प्रासाद कहा गया, लेकिन कोई भव्य वस्तुएं नहीं मिलीं।
- एक पत्थर की मूर्ति को 'पुरोहित राजा' कहा गया।
- यह नाम मेसोपोटामिया के 'पुरोहित राजाओं' से समानता के आधार पर दिया गया।
- मेसोपोटामिया की कीलाक्षर लिपि पढ़ी जा चुकी थी, जिससे यह तुलना संभव हुई।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सभ्यता का अंत

- 1800 ई.पू. में चोलिस्तान जैसे विकसित हड़प्पा क्षेत्रों को त्याग दिया गया।
- गुजरात, हरियाणा, और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में नई बस्तियों की आबादी बढ़ी।
- उत्तर हड़प्पा क्षेत्रों में भौतिक संस्कृति में बदलाव हुआ।
- विशिष्ट पुरावस्तुएं, लंबी दूरी का व्यापार, और शिल्प विशेषज्ञता समाप्त हो गईं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

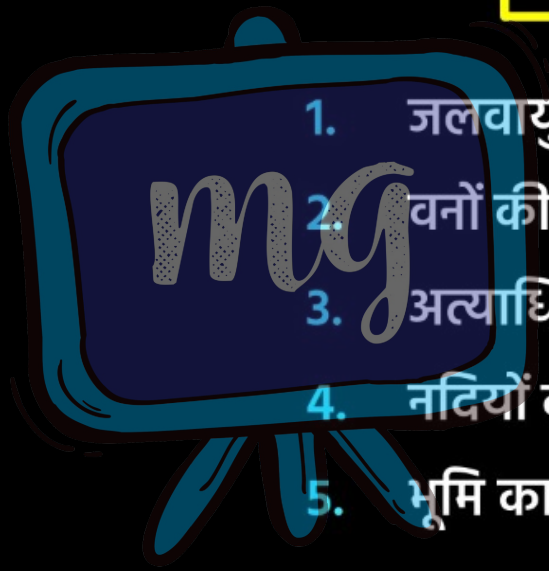
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- आवास निर्माण तकनीक और सार्वजनिक संरचनाओं का निर्माण बंद हो गया।
- ग्रामीण जीवन शैली प्रमुख हो गई; इन्हें उत्तर हड़प्पा या अनुवर्ती संस्कृतियां कहा गया।
- सभ्यता के पतन का मुख्य कारण राज्य के एकीकरण का अंत था।
- मुहरें, लिपि, मनके, मृदभाण्ड, और मानकीकृत बाँट गायब हो गए।
- शहरों का पतन हुआ, और उपमहाद्वीप में पुनः शहरों के विकास में एक सहस्राब्दि लग गई।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

सभ्यता में परिवर्तन के कारण



1. जलवायु परिवर्तन
2. वनों की कटाई
3. अत्याधिक बाढ
4. नदियों का सूखना
5. भूमि का अत्यधिक उपयोग

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

हड़प्पा सभ्यता की खोज

पुरातत्वविदों ने भौतिक अवशेषों से इतिहास के विभिन्न अंशों को जोड़ा, जिससे एक सभ्यता की खोज हुई।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



कनिंघम का भ्रम

- भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के पहले डायरेक्टर जनरल कनिंघम ने उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में पुरातत्विक उत्खनन शुरु किया। कनिंघम और अन्य पुरातत्वविद् अपने अन्वेषणों के लिए साहित्य और अभिलेखों का अधिक उपयोग करते थे।
- कनिंघम की रुचि आरंभिक ऐतिहासिक काल (600 ई.पू. - 400 ई.पू.) और उसके बाद के कालों में थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

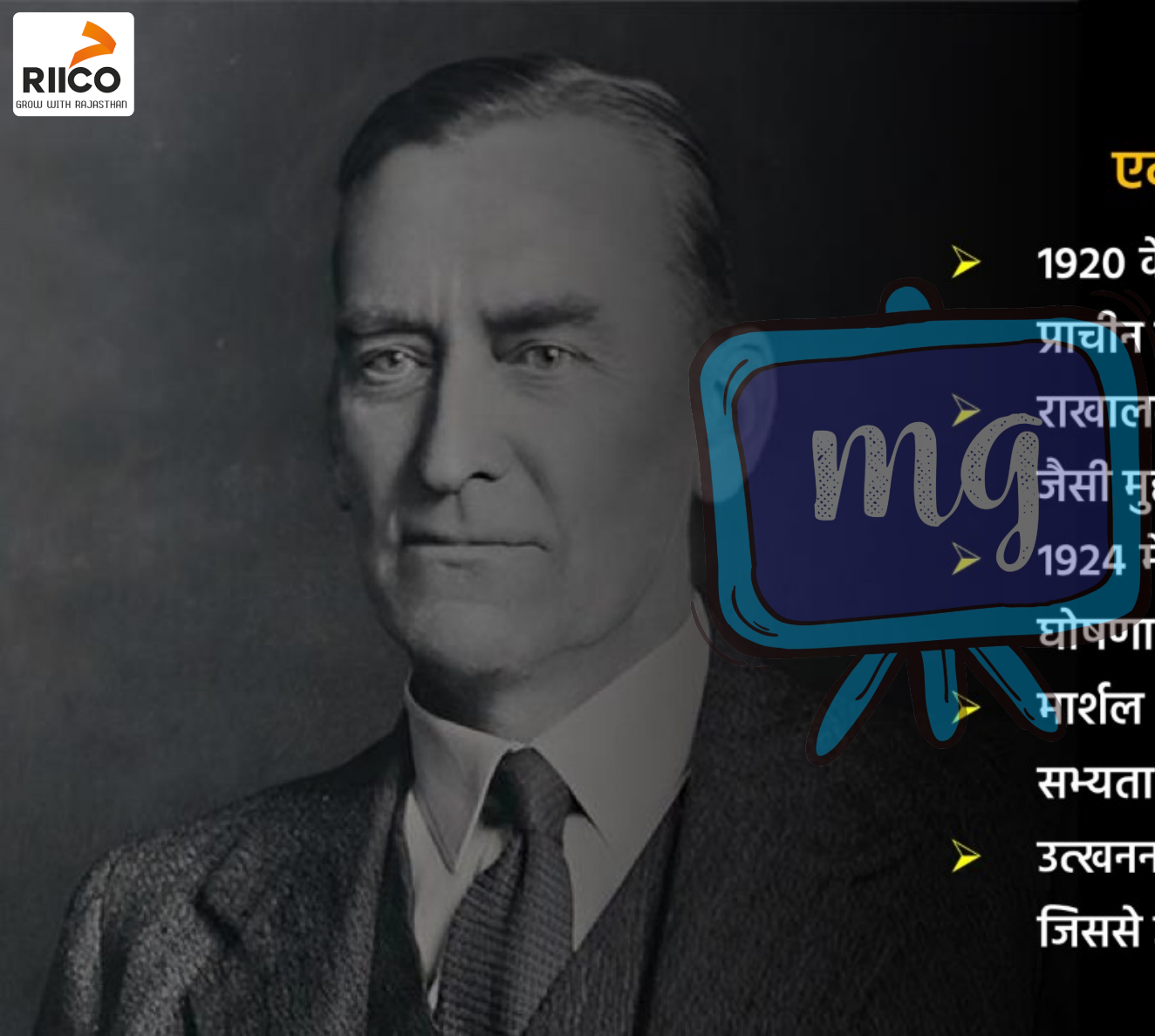
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- उन्होंने चीनी बौद्ध तीर्थयात्रियों के वृतांतों का उपयोग आरंभिक बस्तियों की पहचान के लिए किया।
- सर्वेक्षण के दौरान मिले अभिलेखों का संग्रहण, प्रलेखन और अनुवाद किया।
- सांस्कृतिक महत्व की पुरावस्तुओं की खोज में रुचि रखते थे।
- उन्हें हड़प्पाई पुरावस्तुएं मिलीं, लेकिन उनकी प्राचीनता का अनुमान नहीं लगा सके।

- एक अंग्रेज ने हड़प्पाई मुहर दी, परंतु उसे सही कालखंड में दिनांकित करने में असफल रहे।
- भारतीय इतिहास का प्रारंभ गंगा की घाटी के शहरों से मानने की अवधारणा के कारण हड़प्पा के महत्व को समझने में चूक गए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



एक नवीन प्राचीन सभ्यता

- 1920 के दशक में दयाराम साहनी ने हड़प्पा में प्राचीन मुहरें खोजीं।
- राखालदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ो से हड़प्पा जैसी मुहरें खोजीं।
- 1924 में जॉन मार्शल ने सिंधु घाटी सभ्यता की घोषणा की।
- मार्शल ने मेसोपोटामिया के समकालीन सभ्यता की जानकारी दी।
- उत्खनन में क्षैतिज इकाइयों का प्रयोग किया, जिससे जानकारी लुप्त हो गई।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- उन्होंने चीनी बौद्ध तीर्थयात्रियों के वृतांतों का उपयोग आरंभिक बस्तियों की पहचान के लिए किया।
- सर्वेक्षण के दौरान मिले अभिलेखों का संग्रहण, प्रलेखन और अनुवाद किया।
- सांस्कृतिक महत्व की पुरावस्तुओं की खोज में रुचि रखते थे।
- उन्हें हड़प्पाई पुरावस्तुएं मिलीं, लेकिन उनकी प्राचीनता का अनुमान नहीं लगा सके।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



नयी तकनीकें तथा प्रश्न

- 1944 में आर.ई.एम. व्हीलर ने स्तर विन्यास आधारित खुदाई शुरू की।
- व्हीलर ने पुरातत्व में सैनिक परिशुद्धता का समावेश किया।
- विभाजन के बाद प्रमुख हड़प्पा स्थल पाकिस्तान में चले गए।
- भारतीय पुरातत्वविदों ने कालीबंगन, लोथल, राखीगढ़ी, और धौलावीरा की खोज की।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

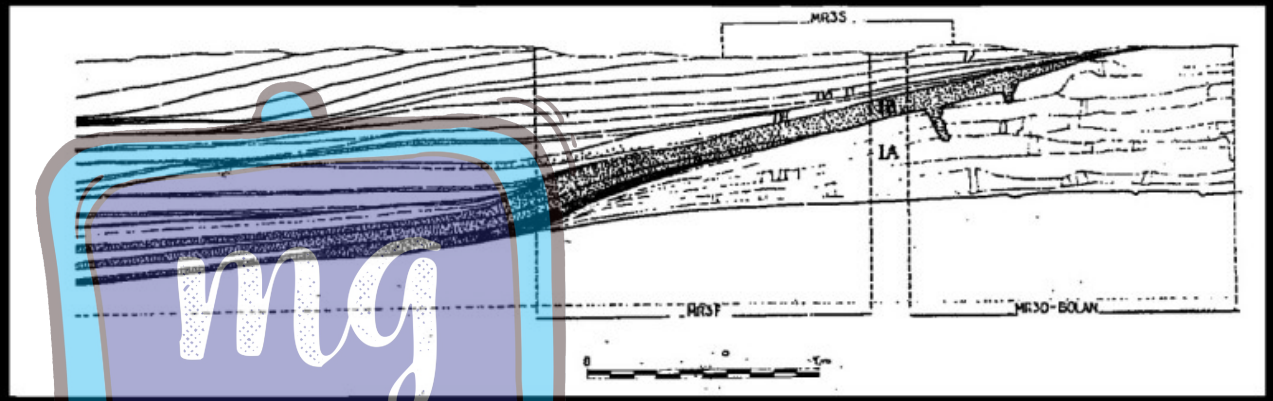
- कुछ पुरातत्वविद सांस्कृतिक उपक्रम तो कुछ भौगोलिक कारणों को समझने का प्रयास करते हैं।
- 1980 के बाद हड़प्पाई पुरातत्व में अंतरराष्ट्रीय रुचि बढ़ी।
- आधुनिक तकनीकों से मिट्टी, पत्थर, धातु, और जैव अवशेषों का अध्ययन किया जाता है।

- पुरातात्त्विक स्थल वस्तुओं और विचारों के निर्माण, उपयोग और त्याग से बनते हैं।
- लगातार एक स्थान पर रहने से भूमि के उपयोग से आवासीय टीले (टोला) बन जाते हैं।
- प्राकृतिक क्रियाओं (पानी, कटाव आदि) से भूमि का स्वरूप बदलता है।
- टीलों में मिले स्तरों से प्राचीन वस्तुएं मिलती हैं, जो आवास का इतिहास बताती हैं।

- प्रत्येक स्तर रंग, प्रकृति और वस्तुओं में भिन्न होता है। जिन स्तरों में ये लक्षण नहीं होते, उन्हें "वंवर सार" कहते हैं।
- सामान्यतः, सबसे निचला स्तर प्राचीनतम और ऊपरी नवीनतम होता है।
- इन स्तरों के अध्ययन को स्तरक्रम विज्ञान कहा जाता है।
- मिले पुरावस्तुओं से सांस्कृतिक काल-खण्डों का निर्धारण होता है।
- इससे पुरास्थल का पूरा सांस्कृतिक इतिहास जाना जा सकता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



एक छोटे टीले का स्तरविन्यास ध्यान से देखने पर
पता चलेगा कि ये स्तर सदैव क्षैतिज नहीं हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

अतीत को जोड़कर पूरा करने की समस्याएं

- हड़प्पाई लिपि से सभ्यता के बारे में जानकारी नहीं मिलती।
- जैविक सामग्री जैसे कपड़ा, लकड़ी, चमड़ा उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में सड़ जाते हैं।
- पत्थर, पकी मिट्टी, और धातु ही संरक्षित रहती हैं।
- अधिकांश वस्तुएं पुनः चक्रित की जाती थीं, और अनुपयोगी वस्तुएं ही फेंकी जाती थीं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- बहुमूल्य वस्तुएं या तो पहले ही खोजी जा चुकी थीं या संग्रहण में थीं।
- कई खोजें प्रारूपिक न होकर संयोजिक थीं।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

खोजों का वर्गीकरण

- पुरातत्वविद खोजों को चार सिद्धांतों के आधार पर वर्गीकृत करते हैं।

(i) **प्रयुक्त पदार्थों द्वारा :** पत्थर, मिट्टी, धातु, अस्थि, हाथी दांत आदि का उपयोग।

(ii) **उपयोगिता के आधार पर :** वस्तु औजार, आभूषण, या आनुष्ठानिक वस्तु हो सकती है।

- उपयोगिता का निर्धारण आधुनिक समानताओं और खोज के स्थान (घर, नाला, कब्र, भट्टी) से होता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

खोजों का वर्गीकरण

(iii) **अप्रत्यक्ष साक्ष्यों द्वारा :** कपास के टुकड़े जैसी खोजें, मूर्तियों के चित्रण से पहनावे की जानकारी।

(iv) **संदर्भों की रूपरेखाओं द्वारा :** सही संदर्भ मिलने पर हड़प्पाई मुहर को समझा गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

व्याख्या की समस्याएँ

- धार्मिक प्रथाओं की व्याख्या पुरातत्वविदों के लिए जटिल है।
  - (i) अपरिचित वस्तुओं को धार्मिक महत्व का माना गया।
  - (a) आभूषणों से लदी नारी मूर्तियां "मातृदेवी" के रूप में वर्गीकृत।
  - (b) मानकीकृत मुद्रा में बैठी पुरुष मूर्तियां "पुरोहित राजा" से जोड़ी गईं।

(c) विशाल स्नानागार और वेदियों को आनुष्ठानिक महत्व का माना गया।

- आद्य शिव की मुहरें ऋग्वेद के रुद्र के चित्रण से मेल नहीं खातीं।
- धर्म के आरंभिक और बाद के स्वरुप समान नहीं हो सकते।
- नीति "जात से अज्ञात की ओर बढ़ने" की पुरातत्व में उपयोगी हो सकती है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

एक 'आक्रमण' के साक्ष्य

- डैडमैन लेन एक सँकरी गली है. जिसकी चौड़ाई 3 से 6 फीट तक परिवर्ती है... वह बिंदु जहाँ यह गली पश्चिम की ओर मुड़ती है, 4 फीट तथा 2 इंच की गहराई पर एक खोपड़ी का भाग तथा एक वयस्क की छाती तथा हाथ के ऊपरी भाग की हड्डियाँ मिली थीं। ये सभी बहुत भुरभुरी अवस्था में थीं। यह धड़ पीठ के बल, गली में आड़ा पड़ा हुआ था। पश्चिम की ओर 15 इंच की दूरी पर एक छोटी खोपड़ी के कुछ टुकड़े थे। इस गली का नाम इन्हीं अवशेषों पर आधारित है। जॉन मार्शल, मोहनजोदड़ो एंड द इंडस सिविलाईजेशन, 1931 से उद्धृत।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- 1925 में मोहनजोदड़ो के इसी भाग से सोलह लोगों के अस्थि-पंजर उन आभूषणों सहित मिले थे जो इन्होंने मृत्यु के समय पहने हुए थे। बहुत समय पश्चात 1947 में आर.ई.एम. व्हीलर ने जो भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के तत्कालीन डायरेक्टर जनरल थे, इन पुरातात्विक साक्ष्यों का उपमहाद्वीप में ज्ञात प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद के साक्ष्यों से संबंध स्थापित करने का प्रयास किया। उन्होंने लिखाः ऋग्वेद में पुर शब्द का उल्लेख है जिसका अर्थ है प्राचीर, किला या गढ़। आर्यों के युद्ध के देवता इंद्र को पुरंदर, अर्थात् गढ़-विध्वंसक कहा गया है।

ये दुर्ग कहाँ हैं... या थे...? पहले यह माना गया था कि ये मिथक मात्र थे... हड़प्पा में हाल में हुए उत्खननों ने मानो परिदृश्य बदल दिया है। यहाँ हम मुख्यतः अनार्य प्रकार की एक बहुत विकसित सभ्यता पाते हैं जिसमें अब प्राप्त जानकारी के अनुसार विशाल किलेबंदियाँ की गई थीं... यह सुदृढ़ रूप से स्थिर सभ्यता कैसे नष्ट हुई? हो सकता है जलवायु संबंधी, आर्थिक अथवा राजनीतिक हास ने इसे कमजोर किया हो, पर अधिक संभावना इस बात की है कि जानबूझ कर तथा बड़े पैमाने पर किए गए विनाश ने इसे अंतिम रूप से समाप्त कर दिया।

यह मात्र संयोग ही नहीं हो सकता कि मोहनजोदड़ों के अंतिम चरण में आभास होता है कि यहाँ पुरुषों, महिलाओं तथा बच्चों का जनसंहार किया गया था। पारिस्थितिक साक्ष्यों के आधार पर इंद्र अभियुक्त माना जाता है।